(ग) आर० के० मूर्ति (घ) एस० चन्द्रा।

● गद्यांश पर आधारित अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

१. निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर उनके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) आखिर वह क्या था; जिसके कारण यह सम्भव हो सका? महत्त्वाकांक्षा? कई बातें मेरे दिमाग में आती हैं। मेरा ख्याल है कि सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह रही कि मैंने अपने योगदान के मुताबिक ही अपना मूल्य आँका। बुनियादी बात जो आपको समझनी चाहिए, वह यह है कि आप जीवन की अच्छी चीजों को पाने का हक रखते हैं, उनका जो ईश्वर की दी हुई हैं। जब तक हमारे विद्यार्थियों और युवाओं को यह भरोसा नहीं होगा कि वे विकसित भारत के नागरिक बनने के योग्य हैं, तब तक वे जिम्मेदार और ज्ञानवान् नागरिक भी कैसे बन सकेंगे।

प्रश्न— (१) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
अथवा उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(२) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(३) लेखक के अनुसार उसकी सफलता के पीछे सबसे महत्त्वपूर्ण बात क्या रही?
(४) लेखक युवा छात्रों को कौन-सी बुनियादी बात समझने को कहते हैं?
(५) युवा छात्र जिम्मेदार और ज्ञानवान नागरिक कब तक नहीं बन सकेंगे?

(ख) विकसित देशों की समृद्धि के पीछे कोई रहस्य नहीं छिपा है। ऐतिहासिक तथ्य बस इतना है कि इन राष्ट्रों—जिन्हें जी-८ के नाम से पुकारा जाता है—के लोगों ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी इस विश्वास को पुख्ता किया कि मजबूत और समृद्ध देश में उन्हें अच्छा जीवन बिताना है। तब सच्चाई उनकी आकांक्षाओं के अनुरूप ढल गई।

प्रश्न— (१) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
अथवा उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(२) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(३) किसकी समृद्धि के पीछे कोई रहस्य नहीं छिपा है?
(४) जी-८ के नाम से किसे पुकारा जाता है?
(५) जी-८ के देशों के लोगों ने किस विश्वास को पुख्ता किया?

(ग) मैं यह नहीं मानता कि समृद्धि और अध्यात्म एक-दूसरे के विरोधी हैं या भौतिक वस्तुओं की इच्छा रखना कोई गलत सोच है। उदाहरण के तौर पर, मैं खुद न्यूनतम वस्तुओं का भोग करते हुए जीवन बिता रहा हूँ, लेकिन मैं सर्वत्र समृद्धि की कद्र करता हूँ; क्योंकि समृद्धि अपने साथ सुरक्षा तथा विश्वास लाती है, जो अन्ततः हमारी आजादी को बनाए रखने में सहायक है। आप अपने आस-पास देखेंगे तो पाएँगे कि खुद प्रकृति भी कोई काम आधे-अधूरे मन से नहीं करती। किसी बगीचे में जाइए। मौसम में आपको फूलों की बहार देखने को मिलेगी अथवा ऊपर की तरफ ही देखें, यह ब्रह्माण्ड आपके अनन्त तक फैला दिखाई देगा, आपके यकीन से भी परे।

प्रश्न— (१) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
(२) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(३) लेखक के अनुसार कौन एक-दूसरे का विरोधी नहीं है?
(४) समृद्धि अपने साथ क्या लाती है?
(५) समृद्धि अन्ततः किसे बनाए रखने में सहायक है?

(घ) जो कुछ भी हम इस संसार में देखते हैं, वह ऊर्जा का ही स्वरूप है। जैसा कि महर्षि अरविन्द ने कहा है कि हम भी ऊर्जा के ही अंश हैं। इसलिए जब हमने यह जान लिया है कि आत्मा और पदार्थ; दोनों ही अस्तित्व का हिस्सा हैं, वे एक-दूसरे से पूरा तादात्म्य रखे हुए हैं, तो हमें यह एहसास भी होगा कि भौतिक पदार्थों की इच्छा रखना किसी भी दृष्टिकोण से शर्मनाक या गैर-आध्यात्मिक बात नहीं है।

प्रश्न— (१) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
(२) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(३) हम इस संसार में जो कुछ भी देखते हैं, वह किसका स्वरूप है?
(४) लेखक के अनुसार महर्षि अरविन्द ने क्या कहा?
(५) लेखक के अनुसार शर्मनाक या गैर-आध्यात्मिक बात कौन-सी नहीं है?

(ङ) हमारी युवा शक्ति से सम्पर्क कायम करने के मेरे फैसले का आधार भी यही रहा है। उनके सपनों को जानना और उन्हें बताना कि अच्छे, भरे-पूरे और सुख-सुविधाओं से पूर्ण जीवन के सपने देखना तथा फिर उस स्वर्णिम-युग के लिए काम करना सही है। आप जो कुछ भी करें, वह आपके हृदय से किया गया हो, अपनी आत्मा को अभिव्यक्ति दें और इस तरह आप अपने आस-पास प्यार तथा खुशियों का प्रसार कर सकेंगे।

प्रश्न— (१) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
(२) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(३) लेखक का युवा शक्ति से सम्पर्क कायम करने के फैसले का आधार क्या रहा है?
(४) लेखक के शब्दों में स्वर्णिम युग के लिए कार्य करना कब सही है?
(५) हम अपने आस-पास प्यार तथा खुशियों का प्रसार कब कर सकेंगे?

२ निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए—

पाठ - 8 डा॰ ए॰ पी॰ जे॰ अब्दुल कलाम

जीवन-परिचय :- बहुमुखी प्रतिभा के धनी और आधुनिक भारत के विकास को एक नया आसमान देने वाले "डॉ॰ ए॰ पी॰ जे॰ अब्दुल कलाम" (अबुल पाकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम) का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को धनुषकोडी गाँव, रामेश्वरम, तमिलनाडु में हुआ था। इनके पिता का नाम "जैनुलाब्दीन" था, जो मछुवारों को किराए पर नाव दिया करते थे।

कलाम जी की आरम्भिक शिक्षा रामेश्वरम में ही पंचायत प्राथमिक विद्यालय में हुई, इसके पश्चात इन्होंने मद्रास - इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से अन्तरिक्ष विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की स्नातक होने के पश्चात इन्होंने हावरक्राफ्ट परियोजना पर काम करने के लिए भारतीय रक्षा अनुसंधान संगठन में विकास संस्थान में प्रवेश किया वर्ष 1962 में भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान में आने के पश्चात इन्होंने कई परियोजनाओं में निदेशक की भूमिका निभाई। इन्होंने एस॰ एल॰ वी॰ 3 के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया, इसी कारण इन्हें मिसाइल मैन भी कहा गया। इसरो के निदेशक पद पर आसीन रहे, जिसके पश्चात इन्होंने विभिन्न विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में अध्यापन कार्य किया। अपने अन्तिम क्षणों में भी ये शिलांग में प्रबन्धन संस्थान में पढ़ा रहे थे। वहीं पढ़ाते हुए 27 जुलाई 2015 में इनका निधन हो गया। इन्होंने विभिन्न विश्वविद्यालयों से मानद (मान-प्रतिष्ठा देने वाला) उपाधियाँ प्राप्त होने के साथ-साथ भारत सरकार द्वारा वर्ष 1981 व 1990 में क्रमशः पद्म भूषण व पद्म विभूषण से तथा 1997 में भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

साहित्यिक सेवाएँ :- कलाम जी ने अपनी रचनाओं के द्वारा विद्यार्थियों व युवाओं को जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है। इन्होंने अपने विचारों को विभिन्न पुस्तकों में समाहित किया है।

कृतियाँ :- इण्डिया 2020 ए विजन फॉर द न्यू मिलेनियम, माई जर्नी, इगनाइटेड माइण्डस, विंग्स ऑफ फायर, भारत की आवाज़, टर्निंग प्वॉइण्टेज, हम होंगे कामयाब इत्यादि।

भाषा-शैली - कलाम जी ने मुख्य रूप से अंग्रेजी भाषा में लेखन कार्य किया है, जिसका अनुदित रूप पाठ्यक्रम में संकलित किया गया है। इनकी शैली लाक्षणिक प्रयोग से युक्त है।

पाठ - 8 -
हम और हमारा आदर्श - डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम

गद्यांशो की सन्दर्भसहित व्याख्या :-

क- गद्यांश :- आखिर वह क्या - - - - - - - - - - कैसे बन सकेंगे।

प्रश्न - 1 - उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर :- प्रस्तुत गद्यांश भारत के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक, दार्शनिक और लेखक "डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम" द्वारा लिखित "हम और हमारा आदर्श" नामक आत्मकथात्मक लेख से उद्धृत है। यह लेख हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के गद्य भाग में संकलित है।

प्रश्न - 2 - रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :- अपने प्रस्तुत आत्मकथात्मक लेख में भारत के महान वैज्ञानिक, दार्शनिक और लेखक डॉ० कलाम अपने विचार क्रम के अनन्तर उनके मन में फिर एक और बात आती है कि उनकी सफलता के पीछे जो सबसे महत्वपूर्ण बात रही, वह थी कि उन्होंने विभिन्न वृत्तियों से देश और समाज के लिए जो योगदान दिया, उसके अनुरूप ही उन्होंने अपनी सामर्थ्य के रूप में स्वयं का मूल्यांकन किया, अर्थात उनकी यह महान सफलता एवं योगदान तभी सम्भव हो सका, जब उन्होंने अपनी पिछली सफलताओं से प्रेरणा लेकर अपने मन में यह विश्वास दृढ़ कर लिया कि वे इससे उच्च स्तर की सफलताओं को प्राप्त करने के योग्य हैं। और वे निश्चित रूप से उन्हे प्राप्त कर लेंगे।

लेखक छात्रों को सफलता का मूलमंत्र देते हुए कहते हैं कि युवा छात्रों को एक और आधारभूत बात को समझ लेना चाहिए और वह यह है कि वे उन समस्त वस्तुओं को प्राप्त करने के अधिकारी है, जो ईश्वर-प्रदत्त है, अर्थात यह समस्त संसार ईश्वर की रचना है। और इस संसार में हम जो भी देखते है या जिन भी वस्तुओं का उपभोग करते है। वे सभी ईश्वर की कृपा का ही परिणाम है। उन पर किसी विशेष व्यक्ति जाति वर्ग या देश का ही अधिकार नहीं है। वे समान रूप से सभी के लिए है। इस प्रकार लेखक छात्रों के मन से उस हीनता बोध को समाप्त करना चाहते है। कि वे अपनी किसी भी वास्तविक तथा तथाकथित हीनता के कारण इस संसार मे श्रेष्ठ वस्तुओं या उच्चस्तरीय सफलता पाने के अधिकारी नहीं है।

प्रश्न-3 :- लेखक के अनुसार उनकी सफलता के पीछे सबसे महत्वपूर्ण बात क्या रही?

उत्तर :- लेखक के अनुसार उनकी सफलता के पीछे सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि उन्होंने अपने योगदान के अनुरूप ही अपना मूल्य आँका।

प्रश्न-4- लेखक युवा छात्रों को कौन-सी बुनियादी बात समझने को कहते हैं?

उत्तर :- लेखक छात्रों को इस बुनियादी बात को समझने को कहते हैं कि इस बात को आत्मसात करें कि वे ईश्वर-प्रदत्त सभी अच्छी वस्तुओं को पाने का अधिकार रखते हैं।

प्रश्न-5 :- युवा छात्र जिम्मेदार और ज्ञानवान नागरिक कब तक नहीं बन सकेंगे?

उत्तर :- युवा छात्र जिम्मेदार और ज्ञानवान नागरिक तब तक नहीं बन सकेंगे, जब तक उन्हें यह भरोसा नहीं होगा कि वे विकसित भारत के नागरिक बनने के योग्य हैं।

गद्यांश -(ख) — विकसित देशों की- - - - - - - - - - - - - अनुरूप ढल गई।

प्रश्न - 1 :- गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर :- प्रस्तुत गद्यांश भारत के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक, दार्शनिक और लेखक 'डॉ॰ ए॰ पी॰ जे॰ अब्दुल कलाम' द्वारा लिखित 'हम और हमारा आदर्श' नामक आत्मकथात्मक लेख से उद्धृत है। यह लेख हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के गद्य भाग में संकलित है।

प्रश्न - 2 :- रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए?

उत्तर :- लेखक के अनुसार यदि इन विकसित देशों के विगत इतिहास पर दृष्टिपात किया जाय तो यही ज्ञात होता है कि इन देशों के लोगो की प्रत्येक पीढ़ी ने दीर्घावधि तक अपने मन में इस विश्वास को दृढ़ किया कि उन्हें अपने देश को अधिकाधिक सशक्त बनाना है, अपने देश को प्रत्येक स्थिति में आर्थिक दृष्टि से समृद्ध बनाकर अपने देश के प्रत्येक व्यक्ति का जीवन खुशहाल बनाना है। उन्होंने निश्चय किया कि हमें अपने ही देश में सब प्रकार से सम्पन्न जीवन व्यतीत करना है।

प्रश्न - 3 :- किसकी समृद्धि के पीछे कोई रहस्य नही छिपा है?

उत्तर :- विकसित देशो में समृद्धि के पीछे कोई रहस्य नही छिपा है।

प्रश्न - 4 :- जी - 8 के नाम से किसे पुकारा जाता है?

उत्तर :- विकसित देशों को जी - 8 के नाम से पुकारा जाता है।

प्रश्न - 5 :- जी-8 के देशों के लोगों ने किस विश्वास को पुख्ता किया?

उत्तर :- जी - 8 के देशों के लोगों ने इस विश्वास को पुख्ता किया कि उन्हे उन्हे एक मजबूत और समृद्ध देश में अपना जीवन व्यतीत करना है।

गद्यांश (ग) - मैं यह नहीं मानता कि - - - - - - - - - - - - - यकीन से भी परे।

प्रश्न -1 :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक हिन्दी के गद्य भाग में संकलित 'हम और हमारा आदर्श' नामक पाठ से लिया गया है इसके लेखक 'डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम' जी है

प्रश्न -2 :- रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :- अपने चिन्तन के आधार पर लेखक कहते है कि जैसा कि कुछ भारतीय दार्शनिक कहते है कि समृद्धि या भौतिकता अथवा संसारिकता और अध्यात्म एक दूसरे के विरोधी है, यह पूर्णत: अनुचित मान्यता है। वे समृद्धि और आध्यात्म एक दूसरे के विरोधी है, यह पूर्णत: अनुचित मान्यता है, वस्तुत: इसमें सन्देह नहीं कि हम संसार में भौतिक दृष्टि से सफल होकर ही बेहतर जीवन यतित करने में सफल हो सकते है। और सभी प्रकार से भौतिक दृष्टि से सफल होकर ही बेहतर जीवन यतित करने में सफल हो सकते है। और सब प्रकार से सुखी तथा सन्तुष्ट व्यक्ति ही आध्यात्म की ओर आकृष्ट हो सकता है।

लेखक ने आरम्भ से ही अपने जीवन में कम से कम वस्तुओं का उपयोग करते हुए अपना जीवन व्यतीत किया है फिर भी वे समृद्धि की स्थिति में हम धन, मकान, वस्त्र, शिक्षा, चिकित्सा, आदि के अभाव में उन्नति की दिशा में आगे बढ़ने से वंचित न रह सकेगे। सभी संकटपूर्ण स्थितियों में हमारे पास आवश्यक संसाधन उपलब्ध होगें। हमारी इसी समृद्धि का एक और महत्वपूर्ण परिणाम यह होगा कि हम अपनी आजादी को अथवा अपने अस्तित्व को बनाए रखने में सफल हो सकेंगे। हमारे आस-पास की प्रकृति भी हमे यही सीख देती है। कि हमें कोई भी काम बेमन से नहीं करना चाहिए।

प्रश्न -3 :- लेखक के अनुसार कौन एक दूसरे के विरोधी नहीं है?

उत्तर :- लेखक के अनुसार समृद्धि और अध्यात्म एक दूसरे के विरोधी नहीं है।

प्रश्न -4 :- समृद्धि अपने साथ क्या लाती है?

उत्तर :- समृद्धि अपने साथ सुरक्षा तथा विश्वास लाती है।

प्रश्न -5 - समृद्धि अन्तत: किसे बनाए रखने में सहायक है?

उत्तर :- समृद्धि अन्तत: हमारी आजादी को बनाए रखने में सहायक है

गद्यांश -(घ) :- जो कुछ भी हम - - - - - - - - आध्यात्मिक बात नहीं है।

प्रश्न -1 :- गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक हिन्दी के गद्य खण्ड में संकलित 'हम और हमारा आदर्श' नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम' जी है।

प्रश्न -2 :- रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :- लेखक के अनुसार प्राणी या पदार्थ अथवा आत्मा और पदार्थ, दोनो ही उस ऊर्जा के अंश है और दोनों में ही अभिन्न सम्बन्ध है, लेखक के अनुसार जब हमे यह ज्ञात हो ही गया है कि संसार में सबकुछ परमात्मामय है, सबकुछ उसी ऊर्जा का ही अंश है तो हमे भौतिक पदार्थों की भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। हमें आत्मा के साथ-साथ भौतिक पदार्थों को भी समान रूप से सम्मान की दृष्टि से देखना चाहिए, यही नहीं भौतिक पदार्थों की इच्छा रखना किसी भी दृष्टि से लज्जाजनक अथवा आध्यात्म के विरुद्ध बात नहीं मानी जानी चाहिए। हमे अपेक्षित भौतिक पदार्थों की इच्छा अपने मन में रखनी चाहिए, और उसकी प्राप्ति हेतु अपने पूरे विश्वास और पूरे मन से प्रयास करना चाहिए।

प्रश्न -3 :- हम इस संसार में जो कुछ भी देखते है वह किसका स्वरूप है?

उत्तर :- हम इस संसार में जो कुछ भी देखते है वह ऊर्जा का स्वरूप है।

प्रश्न -4 :- लेखक के अनुसार महर्षि अरविन्द ने क्या कहा है?

उत्तर :- लेखक के अनुसार महर्षि अरविन्द ने यह कहा है कि हम भी ऊर्जा के ही अंश है।

प्रश्न -5 :- लेखक के अनुसार शर्मनाक या गैर-आध्यात्मिक बात कौन-सी नहीं है?

उत्तर :- लेखक के अनुसार भौतिक पदार्थों की इच्छा रखना शर्मनाक या गैर-आध्यात्मिक बात नहीं है।

गद्यांश (ङ) - हमारी युवा-शक्ति - - - - - - - - - - प्रयास कर सकेंगे।

प्रश्न - 1 :- गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक हिन्दी के गद्य भाग में संकलित 'हम और हमारा आदर्श' नामक पाठ से उद्धृत है, इसके लेखक 'डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम' जी है।

प्रश्न - 2 :- रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :- लेखक इस बात पर बल दे रहे हैं कि अपनी और अपने देश की उन्नति की दिशा में प्रयास करते हुए यह भी आवश्यक है कि हम अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार जो भी कार्य करें, वह पूरे मन से करें। बेमन से किये गये किसी भी कार्य की सफलता संदिग्ध ही रहती है। यदि हमें उच्च लक्ष्यों को प्राप्त करना है तो हमें अपने कार्यों को पूरी लगन, तन्मयता और पूरे मन से ही करना होगा। हमारी आत्मा में अथाह शक्ति का स्रोत विद्यमान है। परमात्मा ने सभी व्यक्तियों को भी विभिन्न प्रकार की शक्तियाँ प्रदान की है। अपनी शक्ति में अन्तर्निहित इन शक्तियों को पहचानकर हम असम्भव को भी सम्भव बना सकते हैं। इस प्रकार हम अपनी और अपने राष्ट्र की उन्नति हेतु प्रयासरत होना चाहिए, ऐसा करके हम देखेंगे कि हम अपने परिवार, पड़ोस और समीपवर्ती क्षेत्रों के लोगों में आपसी प्रेम तथा हर्ष का संचार करने में सफल हो सके हैं।

प्रश्न - 3 :- लेखक का युवा-शक्ति से सम्पर्क कायम करने के फैसले का आधार क्या रहा है?

उत्तर :- लेखक का युवा-शक्ति से सम्पर्क करने के फैसले का आधार यह है कि युवा-शक्ति के सपनों को जानकर, उन्हें यह बताना चाहते है कि वे अच्छे, भरे-पूरे व सुख-सुविधाओं से पूर्ण जीवन के सपने देखे तथा फिर अपने उस स्वर्णिम युग के लिए काम करे, जिसे साकार करने के स्वप्न उन्होंने देखे है।

प्रश्न - 4 - लेखक के शब्दों में स्वर्णिम-युग के लिए कार्य करना कब सही है?

उत्तर :- लेखक के शब्दों में स्वर्णिम-युग के लिए कार्य करना तभी सही है, जब युवा-शक्ति पहले सुख-सुविधाओं से पूर्ण जीवन के सपने देखना सीखे।

प्रश्न - 5 - हम अपने आस-पास प्यार तथा खुशियों का प्रयास कब कर सकेंगे।

उत्तर :- हम अपने आस-पास प्यार तथा खुशियों का प्रसार तभी कर सकेंगे, जब हम अपने मन से अपना और दूसरों का कल्याण करनेवाले सपनों को देखकर उनके अनुरूप कार्य करेंगे।